सं स्तु ति

हम संस्तुति करते हैं कि श्रीमती आशारानी आण्णासो स्रोत का लघु-शोध-प्रबंध - "साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना" परीक्षणार्थ प्रेषित किया जाए।

डॉ. गजानन शंकर सुर्वे
हिन्दी विभागाध्यक्ष

डॉ. गजानन सुर्वे एम. ए. पी.एच. डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा-४१५ ००२

प्राचार्य पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य

लाल बहादुर शास्त्री
महाविद्यालय, सातारा

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

डॉ· गजानन शंकर सुर्वे
एम्·ए·,पीएच्·डी·
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा - 415 002 (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक, हिन्दी
शोध-निर्देशक, हिन्दी
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

191-बी, गुरुवार पेठ,
दोशी बिल्डिंग,
सातारा - 415 002
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ· गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा - प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती आशारानी आण्पासो खोत ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्· (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध **"साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना"** मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्रीमती खोत के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सातारा·

दि· 20 जून 1995

डॉ· गजानन शंकर सुर्वे
(शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर)

प्र ख्या प न

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण तथा राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्· (हिन्दी) के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक : 30 जून 1995

श्रीमती आशारानी आण्णासो सोत

शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण तथा राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना

प्रा क्क थ न

साहित्य मानव जीवन को चित्रित करने का एक सशक्त माध्यम है। मानव ने की हुई प्रगति में साहित्य का महत्व है। साहित्य मानव को विरासत के रूप मे मिली हुई देन है। साहित्यकार अधिक संवेदनशील और प्रतिभाशाली होने के कारण उनके साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी साहित्यकार अपने युगीन परिस्थितियों को चित्रित करते हुए साहित्य की निर्मिति करता है। क्योंकि वह उनका आद्य कर्तव्य है। साहित्यिक विधाओं में से नाटक एक ऐसी विधा है कि जिसका अपना एक विशेष स्थान है। नाटक खेलने की चीज होने के कारण रंगमंच पर उसे खेला जाता है और दर्शक उसका आनंद उठाते हैं।

आज का नाटककार सद्यः परिस्थितियों से अवगत होने के कारण सद्यः स्थिति का चित्रांकन करता है। भारत देश को आज़ादी मिलने के पश्चात इस देश पर कई विदेशी आक्रमण हुए, जिनमें चीन और पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किए। स्वतंत्रता मिलने के बाद तुरन्त 1947 को पाकिस्तान ने कश्मीर हासिल करने के लिए युध्द किया। 1962 में चीन ने नेफा पर हमला किया, 1965 में फिर कश्मीर के कारण पाकिस्तान ने आक्रमण किया और 1971 में बाड़ला देश पर पाकिस्तान ने हमला किया, जिन्हें आधारभूत मानकर स्वातंत्र्योत्तर काल के नाटककारों ने एक से बढ़कर एक सुन्दर नाटक लिखें। जिनमें विदेशी आक्रमण, राष्ट्रीय-सांस्कृतिकता का सुंदर चित्रण दिखाई देता है। जिनमें से पाँच प्रतिनिधि नाटकों को चुन लिया है। "साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना" इस विषय पर कभी किसी ने अनुसंधात्मक कार्य नहीं किया है। इसलिए

उस पर प्रकाश डालना हमारा आद्य कर्तव्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध सात अध्यायों में विभाजित है -

प्रथम अध्याय

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "साठोत्तर हिन्दी नाटक : समय संदर्भ" है, जिसके अंतर्गत भारत नामाभिधान, भारत का भौगोलिक परिवेश, भारत : राजनीतिक विभाग, भारत के पड़ोसी देश, भारत विभाजन और स्वतंत्र भारत, माउण्ट बेटन योजना और भारत विभाजन, भारतीय संविधान, भारतीय संविधान की विशेषताएँ भारत की विदेशी नीति और पंचशील, स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत पर हुए विदेशी आक्रमण : भारत - पाक युध्द (1947) , भारत-चीन युध्द (1962), भारत-पाक (1965), भारत-पाक युध्द (बाड़ला देश) (1971) , नाटक : साहित्य की विशिष्ट विधा, साठोत्तर हिन्दी नाटक : महत्व, साठोत्तर हिन्दी नाटक : विशिष्ट संदर्भ-सामाजिक संदर्भ, प्रेम और यौन दृष्टि संदर्भ, इतिहास बोध आधुनिक संदर्भ, सांस्कृतिक संदर्भ, असंगत जीवन संदर्भ, विवेच्य नाटक सामान्य परिचय : "घाटियाँ गूँजती हैं" - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, "नेफा की एक शाम" - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, "हाजीपीर का दर्रा" - राजकुमार, "जय बाड़ला" - डॉ·रामकुमार वर्मा, "युध्दमन" - बृजमोहन शाह, विवेच्य नाटक : अध्ययन प्रणाली आदि बातों का विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

दितीय अध्याय

प्रस्तुत अध्याय "साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण-राजनीति के परिप्रेक्ष्य में" के नाम से अभिहित है जिसमें भारत के पड़ोसी देश-पाकिस्तान, चीन, नेपाळ, भूटान, श्रीलंका, बर्मा, विदेशियों द्वारा भारत पर आक्रमण-जम्मू कश्मीर, नेफा, बाड़ला देश, विदेशी आक्रमण : विविध उद्देश्य, युध्द विजिगीषा : युध्द के जिम्मेदार, युध्द की तैयारी, युध्दनीति, युध्द में लूटमार, युध्द में बहादुरी, युध्द में हार-जीत, युध्द में जासूसी, युध्द में रिपोरटर, युध्द के दुष्परिणाम, युध्द

समस्या और बुध्दिजीवी, युध्द विरोध और युध्द विराम पर प्रकाश डालकर शोध-कार्य की दिशा का संकेत दिया है।

तृतीय अध्याय

प्रस्तुत अध्याय को "साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण - जनजीवन के परिप्रेक्ष्य में" संज्ञा दी गई है। इसमें पारिवारिक प्रेम - माँ बेटी, पिता-पुत्री, पिता-पुत्र, बड़ा भाई - छोटे भाई, पत्नी पति, पति-पत्नी, पारिवारिक जीवन - कर्तव्य की प्रेरणा, प्रेम और घृणा, पारिवारिक असंतुलन, सामाजिक जीवन - बच्चों का जीवन, छात्र जीवन, युवा जीवन, बूढों का जीवन, आतंक से भयावह जीवन, शरणार्थियों का जीवन, वेश्यागमन, विदेशियों से नफरत - लाल रंग से नफरत, जासूसी से नफरत, सैनिक से नफरत, आक्रमण के प्रति नफरत, जनसाधारण के रूप में सैनिक - माँ-बेटी स्थिति, पत्नी-पति स्थिति, पति-पत्नी स्थिति, प्रेम-प्रेयसी स्थिति, बगावत की बू से नफरत, कृतज्ञता का विवेचन-विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय

प्रस्तुत अध्याय को "साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित राष्ट्रीय चेतना" नाम दे दिया है। जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, भारत और जनतंत्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रप्रेम - भारतीयों का भारत के प्रति, चीनियों का चीन के प्रति, जन्मभूमि प्रेम, देशद्रोह आदि विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है।

पंचम अध्याय

प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित सांस्कृतिक चेतना" है। जिसमें सांस्कृतिक स्वरूप, हिमालय का सांस्कृतिक महत्व, विविध तीर्थक्षेत्र, धर्म और विश्वास, परोपकाराय पुण्याय, विविधादर्श, धर्मनिरपेक्षता, सांस्कृतिक विघटन आदि बातों पर विचार किया है।

षष्ठ अध्याय

प्रस्तुत अध्याय को साठोत्तर हिन्दी नाटकों में रंगमंचीय बोध नाम दे दिया है। जिसमें आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, मंचसज्जा, पात्रों की वेशभूषा, अभिनेयता (पात्रों का क्रिया-व्यापार), भाषाशैली तथा संवाद योजना, गीत योजना, प्रकाश योजना और ध्वनि संकेत, दर्शकीय/पाठकीय संवेदना आदि विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है।

सप्तम अध्याय

समन्वित मूल्यांकन नामक प्रस्तुत अध्याय में लघु-शोध-प्रबंध का सार निरूपित किया है।

प्रबंध की मौलिकता

1. प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में भारत पर हुए प्रमुख विदेशी आक्रमण को ध्यान में रखकर लिखे गए प्रतिनिधि नाटकों को अध्ययन का विषय बनाकर लिखा गया यह एक मौलिक लघु-शोध-प्रबंध है।

2. इस लघु-शोध-प्रबंध में पहली बार विवेच्य नाटकों के परिप्रेक्ष्य में विदेशी आक्रमण तथा अनुषंगिक तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

3. नाटक का प्राण तत्व रंगमंच है। अतः इस लघु-शोध-प्रबंध में रंगमंच के विविध आयामों का विवेच्य नाटकों के संदर्भ में विवेचित-विश्लेषित किया गया है।

4. प्रस्तुत प्रबंध में विवेचन-विश्लेषण को अधिक सुस्पष्ट करने के लिए आवश्यकता-नुसार भौगोलिक प्रदेश सीमा रेखा विशिष्ट गाँव युध्दक्षेत्र दिखाने के लिए नक्शों का भी इस्तेमाल किया गया है।

5. जय बाड़ला नाटक के संदर्भ में विवेचन विश्लेषण की पुष्टि हेतु कुछ महत्वपूर्ण छायाचित्र भी समाविष्ट किए गए हैं।

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध वन्दनीय गुरूवर डॉ॰गजानन सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) के निर्देशन में लिखा है। अपने व्यस्त जीवन प्रवाह में भी विषय चयन से लेकर सम्पूर्ति तक उन्होंने आत्मीयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। शोध-प्रबंध की पूर्ति का श्रेय उन्हीं के मार्गदर्शन का फल है। अपने निजी ग्रंथालय से समय-समय पर अध्ययन के लिए किताबे देकर उपकृत किया है। अतः मैं उनकी बहुत ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में गुरूपत्नी वात्सल्यमूर्ति सौ॰देवलता सुर्वे, गुरूकन्या कामायनी सुर्वे, उत्साह मूर्ति प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय सातारा, प्रभारी प्राचार्य संभाजीराव मोटे, काकासाहेब चव्हाण महाविद्यालय, तळमावले, डॉ॰पी॰एस॰पाटील, रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर तथा डॉ॰अर्जुन चव्हाण, प्रा॰जे॰आर॰जाधव आदि मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा देते रहे। उनकी सत्प्रेरणा के लिए मैं उनकी शुक्रगुजार हूँ।

मुझे एम्॰फिल्॰करने की विशेष प्रेरणा मेरे पितामह श्री॰बाळू खोत से मिली। मैं उनकी अत्यंत ऋणी हूँ। मेरे परिवार के सदस्य पिताजी आण्णासो खोत, चाचा श्री॰जंबा सूर्यवंशी, माँ सौ॰बेबी खोत, बुआ श्रीमती शेवंती सरडे, श्वसुर श्रीपाल हावले, सास सौ॰सुगजानी हावले, देवर श्री॰उल्लास हावले, जेठानी सौ॰लक्ष्मी हावले, भाई जिनपाल, धनपाल, प्रदीप, जितेंद्र, बहने सौ॰माधुरी, कुसुम शुभांगी, मीना आदि सदस्यों का भी मुझे अनमोल सहकार्य मिला।

ग्रंथपाल श्री माळी, श्री जगताप, श्री पाटील, और श्री व्ही॰डी॰घुमाळ (पी॰एस॰आय॰) आदि सज्जनों के सहयोग के लिए आभारी हूँ।

मेरे पति श्री आण्णासो हावले, बुआजी कमल खोत और बच्चे कु॰प्रज्योति चि॰अक्षय, अगर घर की जिम्मेदारियों से मुक्त कर मुझे पढ़ाई के लिए समय न देते तो शायद यह शोध-कार्य पूरा ही न हो पाता। अतः मेरे इस शोध-कार्य में वे बराबर के हिस्सेदार हैं।

जिन उपजीव्य ग्रंथों तथा संदर्भ ग्रंथों का उपयोग मेरे लघु-शोध-प्रबंध के लिए किया है उन समस्त ग्रंथकारों की मैं चीर ऋणी हूँ।

आत्मीयता और तत्परता से प्रबंध का टंकन लेखन करनेवाले श्री मुकुन्द ढवले और उनके सहायक श्री सुशीलकुमार कांबले तथा राजू कुलकर्णी की अमूल्य सहायता के लिए मैं कृतज्ञ रहूँगी।

श्रीमती आशाराणी आण्णासो सोत
शोध-छात्रा

मु·पो·आष्टा (कोळी गल्ली)
ता·वाळवा, जिला - सांगली
पिन - 415 301